# तृतीय परिच्छेद

## 3.1 तथ्य-सामग्री संकलन की प्रविधियां

I मूल तथ्य सामग्री

II अनुपूरक तथ्य सामग्री

## 3.2 तथ्य सामग्री के स्रोत

I मूल स्रोत

II अनुपूरक स्रोत (आकृति द्वारा प्रदर्शित)

क. मूल स्रोत के प्रत्यक्ष स्रोत

I. साक्षात्कार-साक्षात्कार की श्रेष्ठता के कारण व सीमाएं

ख. मूल स्रोत के अप्रत्यक्ष स्रोत

I प्रश्नावली - प्रश्नावली के गुण

II प्रश्नावली के प्रयोग की विधियां

III प्रश्नावली के प्रकार

## 3.3 प्रश्नों के उत्तर

## 3.4 प्रश्नावली के उत्तरों की प्राप्ति

(i) उत्तरदाताओं का चयन

(ii) उत्तरदाताओं के वर्ग (आकृति द्वारा प्रदर्शित)

## 3.5 प्रश्नावली का रूप

# तृतीय परिच्छेद

## तथ्य-सामग्री-संकलन की प्रविधियां

प्रविधियां वे तरीके हैं जिनके द्वारा समाजशास्त्री अपने तथ्यों को, उनके तार्किक या सांख्यिकीय विश्लेषण से पूर्व एकत्रित करता है व उन्हें क्रमबद्ध करता है ।

किसी भी शोध का आधार विश्वसनीय तथ्य हैं । शोधकर्त्ता अपनी समस्या से सम्बन्धित स्रोतों का पता लगाने के पश्चात् तथ्यों का संकलन करता है, क्योंकि तथ्य सामग्री के अभाव में शोध निरर्थक है । इसी तथ्य सामग्री को एकत्रित करने के लिए अनेक स्रोतों को काम में लाया जाता है तथा शोध के अन्तर्गत विविध प्रकार की प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है । प्रत्येक प्रविधि एक विशेष प्रकार के प्रदत्तों को संकलन करने का स्त्रोत है । प्रविधियों द्वारा प्रदत्तों का संकलन शोध प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण सोपान है क्योंकि इन्हीं प्रदत्तों के आधार पर ही शोधकार्य के निष्कर्ष निकाले जाते हैं ।

एक शोधकर्त्ता अपने शोध में तथ्य सामग्री को आधार मानकर चलता है क्योंकि तथ्य सामग्री के आभाव में शोधकार्य को संचालित नहीं किया जा सकता। जब तक तथ्य सामग्री शोधकर्त्ता को प्राप्त नहीं होगी वह न तो परिणामों को प्राप्त कर सकता है और न ही उनका विश्लेषण कर सकता है ।

शोध की सफलता केवल इसी बात पर निर्भर होती है कि तथ्य सामग्री के स्रोत विश्वसनीय है या नहीं । जिस तथ्य सामग्री का शोध में विशेष महत्त्व है वह दो प्रकार की है -

1. मूल तथ्य सामग्री 2. अनुपूरक तथ्य सामग्री

### 1. मूल तथ्य सामग्री

मूल अथवा प्राथमिक तथ्य सामग्री के अन्तर्गत शोधकर्त्ता स्वयं घटनास्थल पर जाकर सम्बन्धित व्यक्तियों के साक्षात्कार, निरीक्षण, प्रश्नावली, अनुसूची आदि स्रोतों द्वारा आंकड़े प्राप्त करता है । इसे प्राथमिक इसलिए कहा गया है क्योंकि शोधकर्त्ता सामग्री को मूल स्रोतों से प्राप्त करता है । इस सामग्री को क्षेत्रीय सामग्री की भी संज्ञा दी जाती है क्योंकि शोधकर्त्ता स्वयं उस क्षेत्र में जाकर निरीक्षण करता है तथा सम्बन्धित लोगों से सम्पर्क स्थापित करता है ।

2. अनुपूरक तथ्य सामग्री

शोध में अनुपूरक तथ्य सामग्री एकत्रित करने के अन्तर्गत शोधकर्त्ता प्रकाशित या अप्रकाशित प्रलेखों, पत्रों, डायरियों तथा पाण्डुलिपियों आदि स्रोतों द्वारा आंकड़े प्राप्त करता है । अनुपूरक तथ्य सामग्री को एकत्रित करने के लिए शोधकर्त्ता दो मुख्य स्रोतों द्वारा दत्तों को एकत्रित करता है -

1. व्यक्तिगत प्रलेख 2. सार्वजनिक प्रलेख

1. व्यक्तिगत प्रलेख

व्यक्तिगत प्रलेख के अन्तर्गत, शोधकर्त्ता व्यक्तिगत डायरियों, पत्रों तथा संस्मरणों आदि स्रोतों द्वारा अपने शोध से सम्बन्धित सामग्री को एकत्रित करता है ।

2. सार्वजनिक प्रलेख

सार्वजनिक प्रलेख के अन्तर्गत शोधार्थी अपनी शोध सामग्री को पुस्तकों, रिपोर्ट रिकार्ड, शिलालेख आदि स्रोतों द्वारा संकलित करता है ।

## तथ्य सामग्री के स्रोत

प्रत्येक शोध की आवश्यकता पर निर्भर करता है कि कौन-कौन से स्रोत आवश्यक है या अनावश्यक, संगत हैं या असंगत । विभिन्न विद्वानों और लेखकों ने तथ्य सामग्री एकत्रित करने के स्रोतों को दो भागों में विभाजित किया है ।

1. मूल स्रोत 2. अनुपूरक स्रोत

## मूल स्रोत

मूल स्रोत उन स्रोतों को कहते हैं जिनसे शोधकर्त्ता स्वयं प्रथम बार उन तथ्यों अथवा उन विभिन्न सूचनाओं को संकलित करता है, जिन तथ्यों की आवश्यकता शोध में होती है ।

मूल स्रोतों के अन्तर्गत शोधकर्त्ता साक्षात्कार, निरीक्षण, अनुसूची, प्रश्नावली आदि स्रोतों द्वारा दत्तों को एकत्रित करता है ।

# तथ्य सामग्री के स्रोत

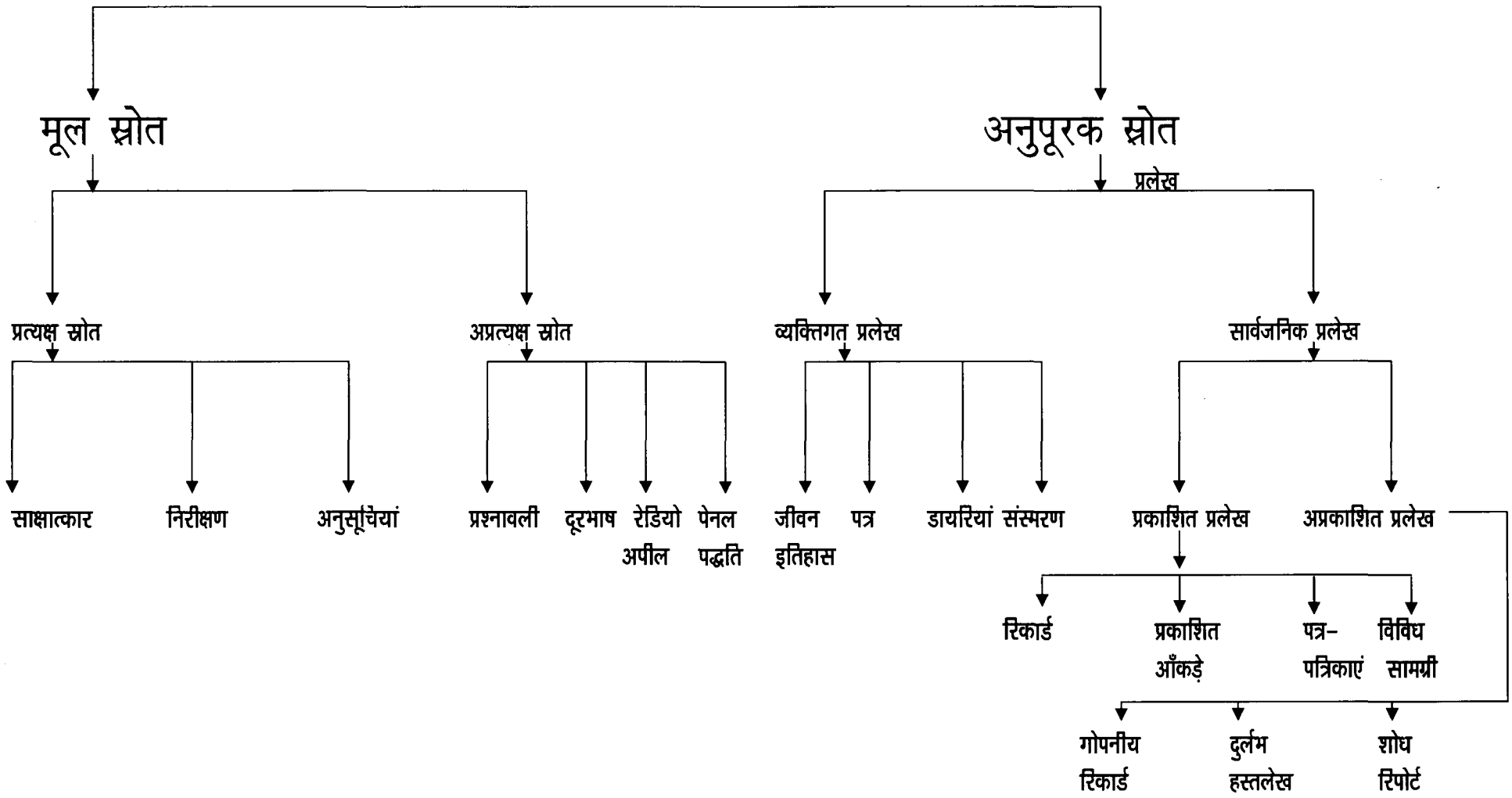

## अनुपूरक स्रोत

अनुपूरक स्रोतों का भी शोधकार्य में विशेष महत्त्व है । अनुपूरक स्रोतों के अन्तर्गत शोधकर्त्ता प्रकाशित या अप्रकाशित प्रलेखों, पत्र, डायरी, पाण्डुलिपि आदि द्वारा आंकड़े एकत्रित करता है । अनुपूरक स्रोतों के अन्तर्गत प्रलेख व्यक्तिगत व सार्वजनिक दोनों हो सकते हैं ।

व्यक्तिगत प्रलेख के अन्तर्गत जीवन इतिहास, पत्र, डायरियां संस्मरण आदि स्रोतों के अन्तर्गत शोधकर्त्ता दत्तों का संकलन करता है तथा सार्वजनिक प्रलेख प्रकाशित व अप्रकाशित दोनों हो सकते हैं । प्रकाशित प्रलेख के अन्तर्गत स्रोतों में रिकार्ड, प्रकाशित आंकड़े, पत्र-पत्रिकाएं व विविध सामग्री आती है तथा अप्रकाशित प्रलेख स्रोतों में गोपनीय रिकार्ड, दुर्लभ हस्तलेख व शोध रिपोर्ट द्वारा आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं । मूल स्रोतों को जिन दो स्रोतों द्वारा एकत्रित किया जाता है वे हैं -

1. प्रत्यक्ष स्रोत 2. अप्रत्यक्ष स्रोत

## प्रत्यक्ष स्रोत

जिसमें शोधकर्त्ता स्वयं घटनास्थल पर जाकर अपनी समस्या से सम्बन्धित व्यवहारों तथा घटनाओं का निरीक्षण करता है तथा उसे समुदाय के विभिन्न लोगों से सम्पर्क स्थापित करके सामग्री प्राप्त करता है तथा घटनास्थल का स्वयं अपनी आंखों से निरीक्षण करता है । प्रत्यक्ष स्रोत में निरीक्षण के अतिरिक्त शोधकर्त्ता अपनी समस्याओं के बारे में सीधी बातचीत द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकता है । साक्षात्कार तथा अनुसूचियां इसी के अन्तर्गत आने वाले स्रोत हैं ।

## साक्षात्कार

साक्षात्कार, सूचना प्राप्त करने का वह प्रमुख साधन है जिसमें दो अपरिचित एक-दूसरे के निकट आते हैं ।

जॉन डब्ल्यू वेस्ट के अनुसार, "साक्षात्कार एक प्रकार से एक मौखिक प्रकार की प्रश्नावली है, इसके अन्तर्गत उत्तर लिखने के बजाय आमने-सामने की स्थिति में व्यक्ति मौखिक उत्तर देता है।"[1]

---

1 *अनुसंधान परिचय डॉ. पारसनाथ राय पृष्ठ 286*

## साक्षात्कार की श्रेष्ठता के कारण

साक्षात्कार द्वारा भाषा की कम क्षमता रखने वालों, कम बुद्धि वालों, बच्चों, बूढ़ों तथा कम शिक्षित वर्ग से भी स्रोत एकत्रित किए जा सकते हैं । इस स्रोत द्वारा शोधकर्त्ता सभी प्रश्नों के उत्तर पूछ सकता है तथा उन अनुभवों को प्राप्त किया जा सकता है जो उसे अन्य किसी रूप में नहीं मिल सकते ।

## साक्षात्कार की सीमाएं

साक्षात्कार में कई बार उत्तरदाता सच्चाई को जानबूझकर छिपा देते हैं या बदल देते हैं । इस विधि में सूचना एकत्रित करने में अधिक समय लगता है तथा साक्षात्कार सभी लोग ठीक से नहीं देते। अतः आवश्यक है कि साक्षात्कार लेते समय प्रश्न क्रमबद्ध हो तथा प्रश्न सरल व स्पष्ट हो । कोई भी प्रश्न ऐसा न हो जो उत्तरदाता को उत्तेजित कर दे, न ही उत्तरदाता पर किसी प्रश्न के उत्तर के लिए दबाब डाला जाए, ताकि वो गलत जानकारी दें ।

अन्त में उत्तरदाता को धन्यवाद करना अत्यन्त आवश्यक होता है, ताकि प्रसन्नतापूर्ण वातावरण में साक्षात्कार की समाप्ति हो ।

## अप्रत्यक्ष स्रोत

अप्रत्यक्ष स्रोत में शोधकर्त्ता स्वयं प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदाताओं से सम्पर्क स्थापित कर भी सकता है तथा नहीं भी कर पाता । अप्रत्यक्ष स्रोत में मुख्यतः प्रश्नावलियों को तथा अति गोपनीय मामले जैसे मतपत्रों को सम्मिलित किया जाता है ।

## प्रश्नावली

प्रश्नावली से अभिप्राय उस सुव्यवस्थित तालिका से है जो विषय के सम्बन्ध में सूचनाएं प्राप्त करने में सहयोग देती हैं । शोधकर्त्ता विषय से सम्बन्धित जानकारी प्रश्नावली द्वारा आसानी से प्राप्त कर सकता है । जब शोध का क्षेत्र व्यापक होता है अथवा सूचनादाता दूर-दूर बिखरे होते हैं, तो प्रश्नों की एक सूची डाक द्वारा, ई-मेल द्वारा सूचनादाताओं के पास पंहुचा दी जाती हैं तथा सूचनादाता उस प्रश्नावली को भरकर शोध से सम्बन्धित जानकारी शोधकर्त्ता को देता है । यह स्रोत तभी अधिक लाभप्रद होता है जब उत्तरदाता पढ़े लिखें हो और उनमें सहयोग की भावना हो ।

प्रश्नावली साक्षात्कार प्रविधि का लिखित रूप होता है इसलिए इसे लिखित साक्षात्कार की संज्ञा भी दी जाती है । प्रश्नावली उत्तर प्राप्त करने का ऐसा साधन है जिसमें उत्तरदाता उसकी पूर्ति स्वयं करता है । शिक्षा के क्षेत्र में शोध करते हुए प्रश्नावली का प्रयोग प्रदत्तों के संकलन के लिए सबसे अधिक होता है । प्रश्नावली के प्रश्नों के उत्तरों को उत्तरदाता द्वारा स्वयं भरे जाने के कारण प्रश्नावली प्रविधि को अधिक विश्वसनीय समझा जाता है । प्रश्नावली बनाते समय ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्नावली काफी विस्तृत न हो, उसकी शब्दावली भ्रमपूर्ण न हो, प्रश्नों की छपाई ठीक हो तथा प्रश्नों का क्रम असंगत न हो ।

## प्रश्नावली के गुण

1. प्रश्नावली द्वारा विस्तृत क्षेत्र से सूचना प्राप्त की जा सकती है ।
2. प्रश्नावली द्वारा उन लोगों से भी प्रदत्तों का संकलन किया जा सकता है जिनसे हमारा सीधा सम्पर्क नहीं हो सकता ।
3. प्रश्नावली द्वारा उन सूचनाओं की गोपनीयता को भी प्राप्त किया जा सकता है जो अन्य साधनों द्वारा संभव नहीं । यह प्रणाली कम खर्चीली है । केवल छपाई और डाक या ई-मेल पर ही खर्च होता है ।
4. प्रश्नावली द्वारा साक्षात्कार के दोषों से भी बचाव हो सकता है ।
5. प्रश्नावली भरते समय लोगों को पर्याप्त समय मिलने से सोचकर उत्तरदाता उचित उत्तर दे सकते हैं ।
6. प्रश्नावली की छपाई आकर्षित होनी चाहिए तथा प्रश्नावली में पूर्ण व स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए जाने चाहिए ।
7. प्रश्नावली का क्रम सरल से कठिन की ओर जाना चाहिए ।
8. अच्छी प्रश्नावली का सारिणीयन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण सरल हो ।
9. अच्छी प्रश्नावली वैध एवं विश्वासनीय हो ।

## प्रश्नावली के प्रयोग की विधियां

प्रश्नावली द्वारा उत्तरदाताओं से उत्तर दो प्रकार से लिए जा सकते हैं :-

### 1. प्रत्यक्ष सम्बन्ध

जब सम्पूर्ण उत्तरदाता एक ही स्थान पर हो तो शोधकर्त्ता उनसे प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करके उन्हें प्रश्नावली देता है, प्रश्नावली में प्रस्तुत प्रश्नों के महत्त्व को स्पष्ट करता है व शंका होने पर उसका समाधान भी कर देता है ।

### 2. प्रश्नावली भेज कर

जब उत्तरदाता एक ही स्थान पर उपलब्ध नहीं हो तो डाक द्वारा या ई-मेल द्वारा प्रश्नावली भेज कर उत्तर प्राप्त किए जा सकते हैं ।

## प्रश्नावली के प्रकार

1. प्रतिबन्धित प्रश्नावली
2. खुली प्रश्नावली
3. चित्ररूपी प्रश्नावली
4. मिश्रित प्रश्नावली

## प्रतिबन्धित प्रश्नावली

प्रतिबन्धित प्रश्नावली के अन्तर्गत उत्तरदाता से नियंत्रित रूप में प्रश्नों के उत्तर हां/नहीं, एक को काटना या निशान लगाना अथवा रेखांकित करना द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं । इस प्रकार की प्रश्नावली सरल होती है तथा शोधकर्त्ता की आवश्यकता की पूर्ति करती है तथा इसका सांख्यिकीय विश्लेषण भी सरल होता है ।

## खुली प्रश्नावली

खुली प्रश्नावली में उत्तरदाता अपने शब्दों में अपने विचारानुकूल प्रश्नों के उत्तर देने के लिए स्वतंत्र होता है ।

## चित्ररूपी प्रश्नावली

चित्ररूपी प्रश्नावली में प्रश्नों के स्थान पर चित्र दिए होते हैं जिनमें उत्तरदाता को उत्तर का चुनाव करना होता है । ऐसी प्रश्नावली कम पढ़े-लिखे लोगों व बच्चों के लिए उपयोगी होती है ।

## मिश्रित प्रश्नावली

इस प्रश्नावली में प्रतिबंधित, खुली व चित्ररूपी तीनों प्रकार की प्रश्नावलियों को सम्मिलित किया जा सकता है । क्योंकि कुछ सामाजिक तथ्य इतने जटिल होते हैं कि उनके बारे में जानकारी एक निश्चित प्रश्नावली द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती ।

## प्रश्नों के उत्तर

प्रश्नावली में मुख्यतः प्रश्नों के उत्तर दो प्रकार से दिए जा सकते हैं ।

1. सीमित 2. असीमित

## सीमित उत्तर

सीमित स्वरूप में संक्षिप्त अनुक्रियाएं अथवा 'हां' व 'नहीं' वाले संक्षिप्त उत्तर अथवा प्रस्तावित उत्तरों में से उपयुक्त पर 'सही' व 'गलत' निशान लगाकर प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं ।

## असीमित उत्तर

इन प्रश्नों के उत्तरों के अन्तर्गत उत्तरदाता को अपने शब्दों में उत्तर देने का अवसर प्रदान किया जाता है ।

## प्रश्नावली के उत्तरों की प्राप्ति

### क. उत्तरदाताओं का चयन

प्रश्नावली को जिन उत्तरदाताओं द्वारा भरवाया गया है उनके दो वर्ग हैं, जिनके अन्तर्गत प्रथम वर्ग में वो उत्तरदाता आते हैं जो शोध कर चुके हैं व उन्हें पीएच. डी. की उपाधि मिल चुकी है । दूसरे वर्ग के अन्तर्गत वह उत्तरदाता आते हैं जो शोध कर रहे हैं जिनमें एक वर्ग ऐसे उत्तरदाताओं का है जिन्होंने शोधकार्य तो समाप्त कर दिया है लेकिन उनकी मौखिक परीक्षा अभी होनी है, इसी में एक अन्य वर्ग उन उत्तरदाताओं का है जिनका शोधकार्य अन्तिम चरण में है ।

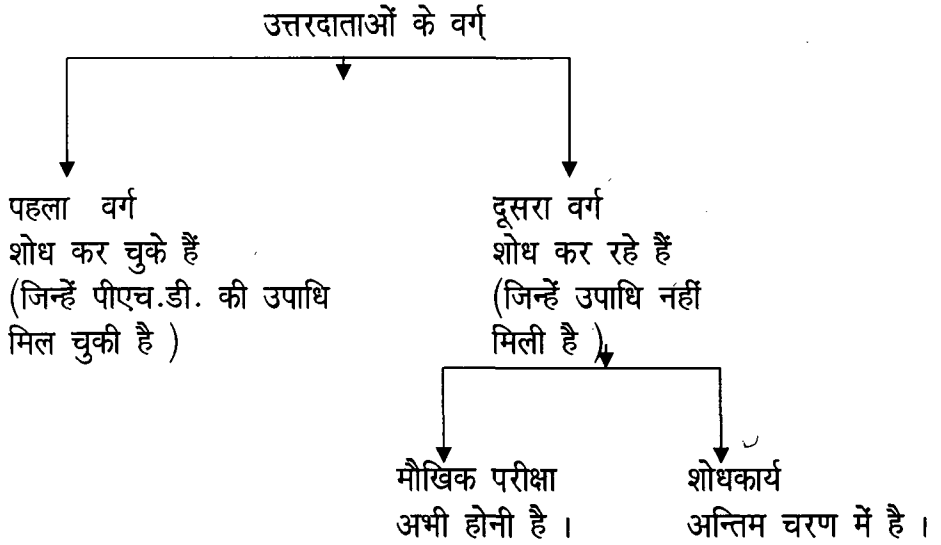


## प्रश्नावली का रूप

"संगीत में शोध की प्रवृत्ति-एक अनुशीलन" शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत प्रश्नावली को जिस प्रकार बनाया गया है वह इस प्रकार है ।

# संगीत में शोध की प्रवृत्ति-एक अनुशीलन

## निर्देशिका

उक्त प्रश्नावली "संगीत में शोध की प्रवृत्ति-एक अनुशीलन" से सम्बन्धित है, जिसके अन्तर्गत शोध कर चुके व कर रहे शोधकर्त्ताओं से प्रश्न पूछे गए है । चूंकि त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है आपसे विनम्र निवेदन है कि आप त्रुटियों की और ध्यान न देते हुए संतोषजनक उत्तर देकर मेरी सहायता करें । प्रश्नावली में वस्तुनिष्ठ व व्यक्तिनिष्ठ दो प्रकार के प्रश्न पूछे गए है, वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर हां/नहीं में व व्यक्तिनिष्ठ के उत्तर कुछ वाक्यों में दें । मैं विश्वास दिलाती हूँ कि आपके उत्तर व नाम गोपनीय रहेंगे ।

धन्यवाद,

नाम व्यवसाय आयु

(क) आप संगीत में शोध कर चुके हैं/कर रहे हैं ।

(ख) आपके शोध का विषय क्या है ?

(ग) आपने दत्तों का संकलन किस प्रकार किया?

(क) साक्षात्कार द्वारा (ख) प्रश्नावली द्वारा

(घ) शोधार्थी किस वर्ग से सम्बन्धित है ?

(क) विकलांग वर्ग (ख) सामान्य वर्ग

(ग) सांगीतिक परिवेश से सम्बन्धित वर्ग

(क) अनुवांशिक वर्ग (ख) सामान्य वर्ग

(ङ) संगीत में शोध करने की प्रवृत्ति का क्या कारण हैं, क्रमानुसार उत्तर दें ।

1 ज्ञान भण्डार में वृद्धि

2 डिग्री का महत्व

3 उच्च कक्षाओं में पढ़ाने के लिए अनिवार्यता

4 उच्च पद प्राप्ति के लिए

5 नवीन वेतनमान व वेतनवृद्धि

6 नौकरी पाने के लिए आवश्यक

(च) आपको शोध करते समय निम्नलिखित समस्याओं में से किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा था/करना पड़ रहा है ?

1 क्या पुस्तकें हिन्दी भाषा के साथ-साथ अन्य किसी भाषा में लिखित थीं/हैं ? हाँ/नहीं

2 क्या आपके विषय से सम्बन्धित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाऐं या ग्रंथ प्रकाशित हुए ? हाँ/नहीं

3 क्या मंगवाई गई पुस्तकें नियत समय पर पहुंची ? हाँ/नहीं

4 क्या आपके विषय से सम्बन्धित किसी प्रकार की सामग्री पुस्तकालय से प्राप्त हुई ? हाँ/नहीं

5 शोध करते समय आपने पुस्तकें खरीद कर कार्य किया था ? हाँ/नहीं

6 क्या शोध करते समय आपने पुस्तकें पुस्तकालय से ही प्राप्त कर शोध कार्य सम्पन्न किया ? हाँ/नहीं

7 क्या मौलिक ग्रंथों के अनुवादों का तथ्य स्पष्ट है ? हाँ/नहीं

8 क्या आर्थिक कठिनाई के कारण किसी समस्या का सामना करना पड़ा ? हाँ/नहीं

9 क्या आपको विभाग या सरकार द्वारा कोई आर्थिक सहायता प्राप्त हुई ? हाँ/नहीं

10 क्या आपने नौकरी करते हुए शोधकार्य किया ? हाँ/नहीं


203088

11 क्या भाषाओं की विविधता के कारण किसी समस्या का सामना करना पड़ा ?

हाँ/नहीं

12 स्वरलिपि पद्धति में एकरूपता न होने के कारण किसी समस्या का सामना करना पड़ा?

हाँ/नहीं

13 क्या लोकसंस्कृति की भाषा में एकरूपता न होने के कारण दत्तों को एकत्र करने में किसी समस्या का सामना करना पड़ा ? हाँ/नहीं

14 लोकगीतों व लोकनृत्यों में विविधता के कारण कठिनाई हुई ? हाँ/नहीं

15 क्या विषय सम्बन्धी क्षेत्र की पूर्ण जानकारी न होने के कारण समस्या का सामना करना पड़ा ? हाँ/नहीं

16 क्या निर्देशक ने समय की उपयोगिता का ध्यान रखा ? हाँ/नहीं

17 क्या दिए गए समय पर निर्देशक मिले? हाँ/नहीं

18 क्या निर्देशक ने कार्य अवधि में कार्य पूरा करवाया ? हाँ/नहीं

19 क्या दिए गए समय पर उत्तरदाता मिले ? हाँ/नहीं

20 क्या उत्तरदाता/साक्षात्कारकर्त्ता ने ठीक उत्तर देने में संकोच किया ? हाँ/नहीं

21 क्या उत्तरदाता/साक्षात्कारकर्त्ता ने आपसे किसी प्रलोभन की आशा रखी ? हाँ/नहीं

22 क्या उत्तरदाता/साक्षात्कारकर्त्ता आप पर यह दबाब डालते थे कि उनके द्वारा दिए गए उत्तर को ही सही माना जाये ? हाँ/नहीं

23 क्या प्रश्नावली/साक्षात्कार के उत्तर दबाब या असत्यता को तो नहीं दर्शाते हैं ?

हाँ/नहीं

(क) शोध करने के लिए पंजीयन करवाने हेतु अथवा निर्देशक सम्बन्धी किसी समस्या का सामना करना पड़ा, अगर हां तो बताइए ?

(ख) पुस्तकालय से पुस्तकें निकलवाते समय किन्हीं कठिनाईयों का सामना करना पडा ? अगर हां तो बताइए ?

(ग) अगर शोध करते समय पुस्तकें स्वयं नहीं खरीदी तो क्या कारण थे ?

(घ) क्या उत्तरी व दक्षिणी संगीत की विविधता के कारण किसी समस्या का सामना करना पड़ा, अगर हां तो क्या ?

(ङ) क्या विषय क्षेत्र से सम्बन्धी विद्वानों से आपको पूर्ण सहयोग मिला, अगर हां तो किस प्रकार का ?

(च) शोध विषय के विद्वान द्वारा सही तथ्य छिपाने पर किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

(छ) संगीत के क्षेत्र से सम्बन्धित व्यक्ति विशेष के योगदान पर किए गए कार्यों को एकत्रित करने में किसी समस्या का सामना करना पड़ा, अगर हां तो कृपया बताइए ।

(ज) उत्तरदाता द्वारा उचित उत्तर न मिलने पर दत्त-संकलन में किन समस्याओं का सामना करना पड़ा, कृपया बताइए ?

(झ) मनोवैज्ञानिक या अन्य परीक्षण करते समय पर्याप्त उपकरण न होने की स्थिति में आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

(त) क्या एकत्रित सामग्री को ठीक तरह से सारिणीयन तथा सांख्यिकीय करने पर किसी समस्या का सामना करना पड़ा है ? अगर हां तो क्या ?

(थ) इन समस्याओं के अतिरिक्त आपको अन्य किसी समस्याओं का सामना करना पड़ा, अगर हां तो कृपया स्पष्ट करें ।